स्मरण

राजेश सिंह © पी.आई.बी. फोटो

राजदूत डेविड सी. मल्फोर्ड

के मुंबई में व्यक्त विचार
11 सितंबर 2006

आज से पांच साल पहले, 11 सितंबर 2001 को अमेरिका पर हुए बर्बर आतंकवादी हमले में करीब तीन हजार बेकसूर लोग मारे गए। इनमें कई भारतीय नागरिक भी थे। अभी दो महीने पहले आतंकवादियों ने मुंबई में निर्दोष नागरिकों को मारने और जख्मी करने के लिए वहां की पांच लोकल ट्रेनों तथा दो रेलवे स्टेशनों पर विस्फोटक रखे।

आतंकवादी हमले की दुखद बरसी पर जहां अमेरिका के लोग हमें हुई क्षति से गमगीन हैं, हम इस बात को अच्छी तरह समझते हैं कि आतंकवादियों ने इस महान देश, भारत को कितना नुकसान और दर्द पहुंचाया है।

11 सितंबर 2001 को हुए हमले के पीड़ितों में 90 से ज्यादा देशों के नागरिक शामिल थे, जो विभिन्न धर्मों के अनुयायी थे। ये हमले अमेरिका में निर्दोष लोगों और दुनिया के विभिन्न भागों के परिवारों के जीवन में दुख-दर्द लेकर आए। भारत के लोग मुंबई, दिल्ली, श्रीनगर और उत्तर-पूर्व के राज्यों में लगातार आतंकवादियों के हमलों के शिकार हुए हैं।

अंतर्राष्ट्रीय बिरादरी के सदस्य के नाते भारत और अमेरिका उस आतंकवाद का मुकाबला करने और उसे शिकस्त देने की प्रतिबद्धता नियमित रूप से व्यक्त करते आए हैं, जो सिर्फ घृणा और विनाश के बीज बोता है। हम जानते हैं कि आतंकवाद सिर्फ किसी एक देश या समुदाय पर हमला मात्र नहीं है। आतंकवाद मुक्त समाजों पर हर जगह सीधा हमला है। इस तरह के निंदनीय कृत्य को किसी भी रूप में जायज नहीं ठहराया जा सकता है, फिर वह चाहे न्यूयॉर्क में हो अथवा मुंबई या मालेगांव में।

भारत और अमेरिका जैसे देशों को एक रखने वाले सिद्धांत और आजादी, उन आतंकवादियों पर विजय पाएंगे जो पूरी दुनिया पर आतंक का राज कायम करना चाहते हैं।

अमेरिका अपने देश की सुरक्षा के लिए पूरी दुनिया में अपने सहयोगियों के साथ आतंकवादियों के खिलाफ कार्रवाई कर रहा है। भारत और अमेरिका के बीच आतंक के खिलाफ सहयोग लगातार बढ़ रहा है। हम उन लोगों को सजा दिलाने के लिए भारत को हर संभव मदद देंगे, जो 11 जुलाई को मुंबई में हुई आतंकवादी वारदात जैसी घटनाओं को अंजाम देते हैं। हम संवेदनशील सूचनाओं, पुलिस को और सक्षम बनाने, फोरेंसिक तकनीक तथा बचाव के उपायों का आदान-प्रदान कर रहे हैं। हम आतंकवादियों की आर्थिक मदद रोकने के मामले में भी सहयोग कर रहे हैं। हमारी ये कोशिशें निश्चित रूप से बहुत-सी जानें बचाएंगी।

हमारे शहरों में हुए हादसों और हिंसा के बावजूद भारत तथा अमेरिका के लोग विविधतापूर्ण, सहिष्णु समाजों के संरक्षण के नए संकल्प के साथ आगे बढ़ेंगे। ये ऐसे समाज हैं जो कानून के नियमों, मानवाधिकारों के सम्मान और हमारे सभी नागरिकों की आजादी की नींव पर खड़े हैं।

अमेरिकी जनता और हमारे भारतीय मित्र आज और प्रतिदिन इस बात का संकल्प लेते हैं कि हम दृढ़प्रतिज्ञ और निर्भीक रहेंगे तथा उन लोगों को नहीं भूलेंगे, जिन्हें आतंकवाद ने हमसे छीन लिया है। हमें अपनी इस मान्यता पर पूरा भरोसा है कि हर व्यक्ति चाहे वह कहीं का भी रहने वाला हो- न्याय, सम्मान और गरिमा का समान रूप से हकदार है। भारत और अमेरिका अपने आधारभूत सिद्धांतों पर आस्था रखेंगे, क्योंकि हमें अपनी आजादी को कायम रखना है और अपने शत्रुओं को न्याय के कठघरे में खड़ा करना है। □

फोटो: मोहम्मद जफर/यू.एन.डी.पी.